भारतीय कृषि सांख्यिकीय संस्था की पत्रिका

(हिन्दी परिशिष्ट)

सम्पादक :—डॉ० बी० बी० पी० एस० गोयल

खंड २९] दिसम्बर १९७७ [अंक २

अनुक्रमणिका

1. विस्तृत वर्ग विभाज्य तथा अतिघन अभिकल्पनाओं की विशेष श्रेणियों की खण्ड रचना
—के० आर० अग्रवाल iii

2. प्रतिदर्श में वृहत इकाइयों के सम्मिलित करने के सम्बन्ध में
—डी० सिंह और आर० सिंह iii

3. $p \times q$ संकरित असममित बहु-उपादानीय अभिकल्पनाओं की रचना व विश्लेषण पर
—ए० के० निगम iii

4. सममित युग्मों के लिए ब्राडले-टेरी प्रतिरूपों के सम्बन्ध में
—जी० सदाशिवन तथा एस० एस० सुन्दरम iv

5. परिवार (क) संतुलित अपूर्ण खण्ड अभिकल्पनाओं से कुछ उपयोगी रासायनिक तुला तोलन अभिकल्पनाओं के सम्बन्ध में —एस० सी गुप्ता तथा एम० एन० दास iv

6 समरेखता के आधीन चारे-दूध के सम्बन्ध के प्राक्कलन में बाहरी सूचना का प्रयोग —टी० जेकोब v

7. आंशिक संतुलित लयंगी अभिकल्पनाओं के निर्माण पर एक नोट
—**एच० पी० अग्रवाल** v

8. असमान सम्भाविता प्रतिचयन विधि पर एक नोट
—**एस० के० अग्रवाल तथा बी० बी० पी० एस० गोयल** v

9. उपयोगी संख्यायें तथा प्रसामान्य बंटन
—**एच० पी० भट्टाचार्य** vi

10. जल संरक्षण तथा उसका उपयोग
—**डी० सिंह और पी० एन० भार्गव** vi

समरेखता के आधीन चारे-दूध के सम्बन्ध के प्राक्कलन में बाहरी सूचना का प्रयोग

द्वारा

टी० जैकोब

भारतीय कृषि सांख्यिकीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

सारांश

दूध उत्पादन तथा दो पोषक तत्वों अर्थात् डी० सी० पी० और टी० डी० एन० से सम्बन्धित उत्पादन फलन के प्राक्कलन में शोधकर्ता को प्रायः दो समन्वेषी चरों में अधिक समरेखता की समस्या का सामना करना पड़ता है। इस पत्र में इस समस्या के समाधान के लिए एक उपयुक्त बाहरी सूचना को कार्य रूप देने, जिससे कि समष्टिज का प्राक्कलन हो सके, वर्णन है।

आंशिक संतुलित लयंगी अभिकल्पनाओं के निर्माण पर एक नोट

द्वारा

एच० पी० अग्रवाल

पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला।

सारांश

इस नोट में अन्तर विधि के प्रयोग से 2-सहचरी चक्रीय आंशिक संतुलित लयंगी अभिकल्पनाओं के निर्माण की एक विधि दी गयी है।

असमान सम्भाविता प्रतिचयन विधि पर एक नोट

द्वारा

एस० के० अग्रवाल, जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर तथा

बी० बी० पी० एस० गोयल, कृषि सांख्यिकीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली-12

सारांश

इस नोट में, दो एककों वाले प्रतिदर्शों में एक अप्रतिस्थापन असमान संभाविता प्रतिचयन योजना सुझायी गयी है। यह देखा गया है कि इस प्रतिचयन योजना में किसी एकक तथा एककों के किसी युगल के लिए प्रतिदर्श में सम्मिलित होने की सम्भावितायें क्रमशः वही हैं जो येट्स तथा ग्रुण्डी की प्रतिचयन योजना में होती हैं।

उपयोगी संख्यायें तथा प्रसामान्य वंटन

द्वारा

एच० पी० भट्टाचार्य

सोलिड स्टेट भौतिकी प्रयोगशाला नई दिल्ली-7

सारांश

उपभोक्ता के लिए उपयुक्त विभिन्न आकार के मानवमितीय मापों को ज्ञात करने के लिए गॉसियन वंटन के साथ उपयोगी संख्याओं की महत्ता पर बल दिया गया है जिससे कि व्यवसायिक प्रबन्धकों के लिए बहुत सस्ती उत्पादन तालिका मिल जाये।

जल संरक्षण तथा इसका उपयोग

द्वारा

डी० सिंह और पी० एन० भार्गव

कृषि सांख्यिकीय अनुसंसान संस्थान, नई दिल्ली।

सारांश

कृषि उत्पादन तथा प्रति एकड़ आय को बढ़ाने के लिए सिंचाई सुविधाओं का विस्तार अनिवार्य समझा जाता है। इस सम्बन्ध में सरकार द्वारा गत वर्षों में छोटी-बड़ी अनेक योजनायें आरम्भ की गयीं परन्तु कृषि विकास में उनका प्रभाव विशेष रूप से दृष्टिगोचर नहीं हुआ। अधिकतर किसानों की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए इस लेख में यह सुझाव दिया गया है कि भारी वर्षा की अवधि में बह जाने वाले जल का संरक्षण किया जाय। विभिन्न क्षेत्रों के लिए, इस बह जाने वाले जल के कुछ अंश के संरक्षण की विधि पर, उपलब्ध जल की मात्रा के अनुसार, विचार किया गया है। वर्तमान व्यवस्था की तुलना में इस व्यवस्था की अधिक उपयोगिता विस्तार से बतायी गयी है।